'डाक पंजियन सं. Jaipur city/223/2015-17
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 21 | अंक 13 | 19 सितम्बर, 2017 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

शेखावाटी से जैसलमेर तक प्रसन्नता की लहर

'संघ के स्वयंसेवक गजेन्द्रसिंह महरोली बने केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री'

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 3 सितम्बर को किए गए मंत्रिमंडल विस्तार में श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक एवं जोधपुर संसदीय क्षेत्र से 4 लाख से अधिक वोटों से जीतकर सांसद बने गजेन्द्रसिंह महरोली को केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री के रूप में शामिल करने पर शेखावाटी से लेकर जैसलमेर के सीमान्त क्षेत्र तक प्रसन्नता की लहर प्रवाहित हुई। हर मिलने वाले अपना बना लेने की कला में माहिर श्री महरोली से मिल चुका हर व्यक्ति अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहा था एवं एक योग्य सांसद को राष्ट्र सेवा का उचित अवसर देने के लिए प्रधानमंत्री का आभार जता रहा था।

'चपरासी से लेकर राष्ट्रपति तक के लिए योग्य'

इन्हें जो भी जिम्मेदारी दी जाएगी उसे बखूबी निभाएंगे, इनमें चपरासी से लेकर राष्ट्रपति तक की जिम्मेदारी निभाने की क्षमता है ऐसा मेरा मानना है। गजेन्द्रसिंह महरोली के शपथ ग्रहण समारोह के साक्षी बनने पहुंचे माननीय संघ प्रमुख श्री ने मीडिया से बात करते हुए उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि इनके मंत्री बनने से केवल राजपूत समाज में ही नहीं बल्कि सर्व समाज में अच्छा संदेश जाएगा ऐसा मेरा मानना है। मैंने आज तक इन्हें जो भी राजनीतिक या सामाजिक जिम्मेदारी दी है उसे इन्होंने ये बखूबी निभाया है और आज की जिम्मेदारी में भी श्रेष्ठ परिणाम देंगे ऐसा मेरा मानना है। उन्होंने कहा कि इनका आकर्षक व्यक्तित्व इनकी सबसे बड़ी विशेषता है। ➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक व जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग में अतिरिक्त मुख्य अभियंता के दायित्व से सेवानिवृत शंकरसिंह महरोली के पुत्र गजेन्द्रसिंह बचपन से ही संघ के सम्पर्क में रहे। शंकरसिंह जी के जैसलमेर पदस्थापन के दौरान 3 अक्टूबर 1967 को जैसलमेर में जन्में गजेन्द्रसिंह ने 1982 में संघ का पहला शिविर किया। परिवार में प्रारम्भ से ही सांघिक वातावरण था। इनके पिताजी का बचपन अभावों में बीता एवं स्थिति यह थी कि संघ के शिविर में जाने की गणवेश दो भाइयों के बीच एक ही थी। प्रारम्भ से ही मिले सांघिक संस्कारों ने गजेन्द्रसिंह के जीवन में नेतृत्व क्षमता विकसित की और 1992 में वे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष चुने गए। उन दिनों वर्तमान संघ प्रमुख भगवानसिंह रोलसाहबसर एवं पूर्व संघ प्रमुख नारायणसिंह जी रेड़ा इनके पड़ौस में ही रहते थे ऐसे में मंत्री महोदय को इन दोनों का सानिध्य एवं स्नेह मिला। इनके राजनीति में जाने के निर्णय में वर्तमान संघ प्रमुख श्री का पूरा समर्थन मिला और उसी के बल पर इनके पिताजी से चुनाव लड़ने की अनुमति मिली। कालांतर में एबीवीपी के साथ-साथ ये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अन्य अनुसांघिक संगठनों में माननीय संघ प्रमुख श्री के निर्देश पर सक्रिय हुए एवं सीमाजन कल्याण समिति में विशेष काम किया। 2014 को लोकसभा चुनावों में संगठन में इनके द्वारा किए गए काम एवं माननीय संघ प्रमुख श्री के प्रयासों से इन्हें टिकिट मिला एवं 4 लाख से अधिक मतों के बड़े अंतर से सांसद बने। सांसद बनने के बाद बिना थके की गई मेहनत एवं पार्टी द्वारा सौंपे गए कार्यों को निष्ठापूर्वक करने की प्रवृत्ति ने इन्हें केन्द्रीय नेतृत्व का प्रिय पात्र बनाया।

➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

'संघ शिक्षा पर क्रमिक चलकर पहुंचा यहां तक'

मेरे जीवन के संबल एवं प्रेरक पूज्य तनसिंह जी के आशीर्वाद एवं उनके द्वारा दी गई संस्कारमयी कर्म प्रणाली में अभ्यास कर उनके द्वारा दी गई शिक्षा पर क्रमिक रूप से चल कर ही यहां पहुंचा हूं। 8 सितम्बर को अपने जयपुर प्रवास के दौरान संघशक्ति पहुंचे गजेन्द्रसिंह महरोली ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि वर्तमान संघ प्रमुख माननीय भगवानसिंह रोलसाहबसर का मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद मुझे सदैव मिला और पूरी जिम्मेदारी के साथ कह सकता हूं कि मेरी सफलता का कारण यही है। उन्होंने कहा कि इस स्थान पर मैंने बहुत बार समय गुजारा है और आज नई जिम्मेदारी मिलने के बाद अपनों के बीच पहुंचकर उस खुशी को बांटना

बहुत सुखद अनुभव है। इस अवसर पर माननीय संघ प्रमुख श्री, माननीय महावीरसिंह सरवड़ी, संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास सहित सहित संघ के अनेक स्वयंसेवक उपस्थित थे।

➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

हमारे गांव हमारी जड़

राजपूत की पहचान उसके गांव से होती है। आजकल व्यवसाय, शिक्षा आदि आवश्यकताओं के कारण गांव छोड़कर शहरों में रहने वाले राजपूत परिवारों की नई पीढ़ी अपनी इस पहचान से अनभिज्ञ होती जा रही है। गांवों से कटना एक प्रकार से अपनी जड़ों से कटना है क्यों कि हमारी वंश वृक्ष की जड़ों की ओर जाने पर हमें ज्ञात होता है कि हमारे ही किसी पूर्वज ने उस गांव का रक्षण, पोषण किया है जिसे हम अपना गांव कहते हैं। ऐसे में हमारी जड़ों के प्रतीक उस गांव को जान सकें इसके लिए पथ प्रेरक के 20वें वर्ष के प्रवेश के साथ ही एक नया स्तंभ शुरू गया है - **'हमारे गांव-हमारी जड़।'** इसमें श्रृंखलाबद्ध रूप से प्रति अंक एक गांव का परिचय छापा जा रहा है। इस बार प्रस्तुत है जम्मू कश्मीर के गांव गुड़ा सलाथिया की कहानी।

गुढा सलाथिया : जम्मू का चित्तौड़गढ़

एक ही समय में बने तीन जनरल

चित्तौड़ की रक्त रंजित पावन धरा साहस और स्वामी भक्ति त्याग और बलिदान, स्वतंत्रता प्रेम और संघर्षशीलता से परिपूरित जौहर की ज्वाला से परिशोधित और भक्ति सरिता से सिंचित वह धरा है जो सदैव कर्त्तव्य परायणता का बौध और स्वधर्म पालन के लिए प्रेरित करती रहती है। भारत का कोई भी भू-भाग उपरोक्त कसौटी पर खरा उतरता है तो उस भू-भाग को चित्तौड़ की उपमा देना तर्क संगत होगा। जम्मू-कश्मीर राज्य के जम्मू क्षेत्र में बाड़ी ब्राह्मण और साम्बा के मध्य विजयपुर रेल्वे स्टेशन से मात्र चार किलोमीटर की दूरी पर स्थित 'गांव गुढ़ा सलाथिया' जम्मू का चित्तौड़गढ़ कहलाता है। इस गांव की अपनी अलग पहचान है। यह गांव 'कर्नलों-जनरलों' का गांव भी कहलाता है। पाकिस्तान की सीमा से सटा हुआ गांव, जहां के निवासी सैन्य सेवा को प्राथमिकता देते है। सन् 2006 में इस गांव से दस में से नौ पुरुष सुरक्षा सेनाओं में सेवारत थे। इनमें 14 कर्नल और तीन जनरल के पद पर थे। यह गांव राजपूतों का अधिसूचित गांव है। इसमें सलाथिया खांप, जो जामवालो की ही शाखा है के राजपूतों का बाहुल्य है यही वजह है कि इसका नाम गुढा सलाथिया पड़ा। राष्ट्र की स्वतंत्रता और अखण्डता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए अभी तक लड़े गए सभी युद्धों और सैनिक अभियानों में, यहां के निवासियों ने अपूर्व योगदान और बलिदान दिया है। यह गांव अपनी विशिष्ट उपलब्धियों के कारण 'लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स' में अपना नाम दर्ज करा चुका है। लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स प्रतिवर्ष तीन विभिन्न भाषाओं (हिन्दी, अंग्रेजी और मलयालम) में प्रकाशित होने वाली एक संदर्भ पुस्तक है, जिसमें भारतीयों या भारत से संबंधित अद्भुत कारनामों और घटनाओं के कीर्तिमानों संकलित किया जाता है। इस पुस्तक के प्रकाशन की शुरुआत 1990 में हुई थी। 'गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स' के बाद यह विश्व की दूसरी की इस श्रेणी की पुस्तक है।

सैन्य सेवा को प्राथमिकता देने वाले इस गांवों की सूची में प्रथम स्थान का कीर्तिमान स्थापित कर 2007 में लिम्बा बुक ऑफ रिकार्ड्स में अपना नाम दर्ज कराने का गौरव इस गांव को प्राप्त हो चुका है। इस गांव के अधिकारियों द्वारा स्थापित कीर्तिमान भी विश्व में अपने किश्म की पहली अद्भुत घटना है। गुढा सलाथिया के मेजर महातम सिंह के तीन पुत्र, तीनों सेना में कमीशन प्राप्त कर जनरल का रैंक हासिल किया और कुछ समय के लिए एक साथ तीनों जनरल के पद पर सेवारत रहे। यह दुनिया के इतिहास का पहली दुर्लभ संयोग है। तीनों भाइयों में ज्येष्ठ ले. जनरल अनूपसिंह जामवाल को दिसम्बर 1966 में, ले. जनरल कुलदीप सिंह को 1967 में और मे. जनरल राजेन्द्रसिंह को 1973 में कमीशन मिला। ये तीन भाई 20 फरवरी 2006 से 31 अगस्त 2006 के दौरान जनरल के पद पर सेवारत रहे और 2007 में प्रकाशित हुई पुस्तक में अपना नाम दर्ज कराया। कमाल की कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। इन भाइयों के एक बहन जिसका विवाह एक सैनिक अधिकारी से सम्पन्न हुआ आज वे भी मेजर जनरल के पद पर पहुंचे। उनका नाम मेजर जनरल सत्यपाल सिंह कंवर है जो गढवाल राईफल्स और लद्दाख स्काउट्स के कर्नल कमाडेन्ट रह चुके हैं।

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

नरेश, नेता व निशानेबाज

स्वरूपसिंह झिंझनियाली

एक राजा राजनीतिज्ञ एवं खिलाड़ी के रूप में पहचाने जाने वाले बीकानेर के पूर्व महाराजा डॉ. करणीसिंह प्रभावशाली व्यक्तित्व की शख्सियत थे। वे महाराजा गंगासिंह के पौत्र तथा महाराजा सार्दुलसिंह के पुत्र थे। उनके दादा महान राजनीतिज्ञ देशभक्त व्यक्तित्व थे तो पिता भारत एकीकरण के सहयोगी। डॉ. करणीसिंह 1950 में बीकानेर राज परिवार के 23वें प्रमुख बने। आपका विवाह डूंगरपुर महारावल लक्ष्मणसिंह की सुपुत्री सुशीला कुमारी के साथ हुआ। आप सैन्ट स्टिफन कॉलेज दिल्ली से शिक्षित थे। '1465 से 1949 तक बीकानेर घराने के केन्द्र सत्ता के साथ संबंध' पर लिखी शोध पुस्तक पर बम्बई विश्वविद्यालय ने उन्हें डाक्टरेट की उपाधि दी। आप बीकानेर राज परिवार के लोकप्रिय प्रमुख थे। आपने विलक्षण दूरदर्शिता के तहत बीकानेर में सार्वजनिक ट्रस्ट होटल तथा म्यूजियम स्थापित किए। उनकी दूरदर्शी सोच का ही प्रमाण है कि उन्होंने 400 वर्ष पुराने अपने विश्व प्रसिद्ध निजी किले 'जूनागढ' को शामिल कर 1961 में महाराजा रायसिंह जी ट्रस्ट की स्थापना की। 1962 में माउंट आबू स्थित बीकानेर हाऊस को एक हैरिटेज होटल का रूप दिया जो वहां का प्रसिद्ध होटल है। 1972 में लालगढ पैलेसे की भूमि व भवन को लेकर महाराजा गंगासिंह जी ट्रस्ट बनाया जिसमें होटल लालगढ़ पैलेस एवं श्री सार्दुल म्यूजियम संचालित होते हैं। इन ट्रस्टों के अतिरिक्त उन्होंने अपने जीवन काल में जनहितार्थ सात अन्य पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट स्थापित किए।

आप स्वतंत्र भारत के महान् सांसदों में शुमार होते हैं। 1952 के प्रथम आम चुनाव से लेकर 1971 तक के पांचवें संसदीय चुनाव तक बीकानेर लोकसभा क्षेत्र से **लगातार पांच बार निर्दलीय**

सांसद चुने गए। तब चूरू भी बीकानेर लोकसभा क्षेत्र का हिस्सा होता था। यह उनके पूर्वजों की ख्याति एवं उनकी लोकप्रियता का ही कारण था कि बिना जातिगत आधार के इतने बड़े भू-भाग से लगातार पांच बार सांसद रहे। आपने संसद में राजस्थानी भाषा को मान्यता देने, बेरोजगारों को राहत देने, बच्चों को आवश्यक व निःशुल्क शिक्षा देने, गरीबों को अनुदान तथा जरूरतमंदों एवं वृद्धजनों की देखभाल के मुद्दों को समय-समय पर लोकसभा में उठाया। लिफ्ट केनाल एवं बीकानेर मेडिकल कॉलेज आपकी देन है। आपने अपने 25 वर्षों से संसदीय कार्यकाल में वेतन एवं भत्तों के रूप में जो कुछ भी प्राप्त हुआ वो सब बीकानेर संभाग के होनहार व जरूरतमंद छात्रों को छात्रवृत्ति के रूप में दे दिया। डॉ. महाराजा करणीसिंह विश्व स्तरीय शूटर (निशानेबाज) थे। उन्होंने पांच बार विश्व शूटिंग चैम्पियनशिप में भारत की तरफ से भाग लिया। उन्होंने 1961 में ओस्लो (नार्वे), 1962 काहिरा (मिश्र) में रजत पदक जीता। आपने पांच बार ऐशियाई चैम्पियनशिप में भी भाग लिया। जिसमें सियोल (कोरिया) में स्वर्ण पदक एवं रजत, तेहरान (ईरान), क्वालालमपुर (मलेशिया) व दिल्ली में रजत पदक जीते। 1982 में दिल्ली में हुए एशियाड (एशियाई खेल) में डॉ. करणीसिंह भारतीय खेलदल के ध्वजवाहक थे। डॉ. करणीसिंह जी ने पांच ग्रीष्म ओलम्पिक खेलों में भारत का क्लेपिजन ट्रेप शूटिंग में प्रतिनिधित्व कर देश का गौरव बढ़ाया जिनमें 1960 में रोम (इटली), 1964 में टोक्यो (जापान), 1968 में मैक्सिको, 1972 में म्युनिख (जर्मनी), 1980 में मास्को (रूस) शामिल है। 1961 में भारत सरकार ने आपको देश का सर्वोच्च खेल पुरस्कार अर्जुन अवार्ड दिया। बीकानेर का खेल स्टेडियम एवं दिल्ली की तुगलकाबाद शूटिंग रेंज डॉ. करणीसिंह के नाम पर है। आपका 1988 में स्वर्गवास हुआ।

➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

रामगढ़ में सामूहिक शाखा

रामगढ़ प्रांत की सेऊवा, राघवा, राजपूत छात्रावास रामगढ़ व भोजराज की ढाणी शाखाओं की सामूहिक शाखा 10 सितम्बर को राजपूत छात्रावास रामगढ़ में आयोजित की गई। प्रांत प्रमुख पदमसिंह रामगढ़ के निर्देशन में लगी सामूहिक शाखा में खेल सहगीत प्रार्थना के साथ-साथ शाखा में नियमितता एवं निरंतरता पर चर्चा की गई। शाखा में शहीद पूनमसिंह को श्रद्धांजलि दी गई एवं उनकी शहादत का वृतांत विस्तार से बताया गया। आगामी प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर एवं राजमथाई में होने वाले माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर के बारे में चर्चा की गई एवं संभावित शिविरार्थियों की सूची बनाई गई।

गणेशोत्सव के दौरान जल सेवा

मुंबई प्रांत के भायंदर की नारायण शाखा एवं राजस्थान राजपूत परिषद की स्थानीय इकाई ने गणेशोत्सव के दौरान जल सेवा का स्टॉल लगाकर गणेश भक्तों की सेवा का लाभ लिया। भागीरथसिंह लुणोल एवं जोगसिंह डूंगरी के संचालन में हुए इस कार्य में परिषद के वरिष्ठ सदस्यों, शाखा के स्वयंसेवकों एवं नन्हें-मुन्नों ने भी भूमिका अदा की।

शिविरों की शृंखला में जुड़े 12 और शिविर

पडुस्मा (गुजरात)

कोलर (पाली)

आंजना महादेव मंदिर (भीलवाड़ा)

'श्री क्षत्रिय युवक संघ चरित्र निर्माण की व्यावहारिक प्रयोगशाला है। यहां नर से नारायण बनने का मार्ग बताया ही नहीं जाता, सामूहिक साधना द्वारा उस मार्ग पर चलाया भी जाता है। संघ द्वारा किया जा रहा यह शिक्षण कार्य आज समाज के लिए अनिवार्य है। इस शिक्षण के अभाव में हम अपनी सांस्कृतिक व जातीय पहचान को खो देंगे।' उपरोक्त बातें केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने पाली जिले के कोलर ग्राम में आयोजित प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर के समापन कार्यक्रम में कही। शिविर 31 अगस्त से 3 सितम्बर के बीच सम्पन्न हुआ। शिविर में मेवी, भाणका, गुडा रामसिंह, गुडा आसकरण, गुडा केशरसिंह, मगरतलाव, बागोल, मानी, बासनी आदि गांवों के लगभग 90 राजपूत बालकों ने भाग लिया। शिविर का संचालन महोब्बत सिंह धींगाणा ने किया। योगेन्द्र सिंह बासनी एवं श्रवण सिंह सांसरी ने शिविर व्यवस्था में सहयोग किया। इसी अवधि में तीन प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर चित्तौड़गढ़, जयपुर व दौसा जिलों में सम्पन्न हुए। चित्तौड़गढ़ के विजयपुर के पास मोडिया महादेवजी बगेरिया में आयोजित शिविर में आसपास के गांवों के 75 बालकों ने भाग लिया। शिविर संचालक भंवरसिंह बेमला के निरीक्षण में बालकों ने जलझूलनी एकादशी के दिन नदी स्नान का आनंद भी प्राप्त किया। शिविर के दौरान महन्त श्री शीतलदास भी क्षत्रिय बालकों में संस्कार निर्माण के इस कार्य के साक्षी बने। गोपाल शरण सिंह सहाडा, दिग्विजय सिंह विजयपुर, विरेन्द्रसिंह तलावदा, लक्ष्मण सिंह भाटियों का खेडा आदि ने शिविर की व्यवस्था संभाली। जयपुर ग्रामीण प्रांत का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर कालवाड़ रोड़ स्थित सांचोती गांव में सुरेन्द्रसिंह कासेडा के फार्म हाऊस पर सम्पन्न हुआ, जिसमें जयपुर प्रांत की विभिन्न शाखाओं एवं ढिंढा, सरना चांद, रोजना आदि गांवों से 90 बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। रामसिंह आकदड़ा ने शिविर का संचालन किया। केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ का सान्निध्य भी शिविर के प्रथम दिन शिविरार्थियों को प्राप्त हुआ। इसी प्रकार दौसा प्रांत में झापड़ावास गांव में स्थित मनसा माता के मंदिर में शिविर आयोजित हुआ, जिसमें झापड़ावास, बहरावण्डा, लांका, मलारणा, मोचींगपुरा, कारोली, बाढ़, राणोली, लिखली, श्रीपुरा आदि गांवों के 80 बालकों ने प्रशिक्षण लिया। जयपुर संभाग प्रमुख विक्रमसिंह सिंघाणा एवं केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ ने शिविर का निरीक्षण किया। संचालन जितेन्द्रसिंह सिसरवादा ने किया।

31 अगस्त से 03 सितम्बर की अवधि में ही भीलवाड़ा देवगढ़ रोड पर स्थित आंजना महादेव राजपूत धर्मशाला में बालिका शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें भीलवाड़ा, पाली एवं राजसमन्द जिले के देवगढ़, नीमझर, भारतसिंह जी का गुड़ा, लालसिंह जी का खेड़ा, कणवेरा, इशरमण्ड, चवला रेल का खेडा, कुन्दवा, बलेव, उमरी, बिलाखी, लसाणी, काकरोड़, माण्डावाड़ा, कुंवारिया, आंजनेश्वर आदि गांवों की बालिकाओं ने भाग लिया। शिविर में कुल संख्या 150 रही तथा संचालन श्रीमती लक्ष्मी कंवर खारड़ा ने किया। संभाग प्रमुख गंगासिंह साजियाली व प्रांत प्रमुख ब्रजराजसिंह खारड़ा भी शिविर में उपस्थित रहें। इसी दौरान बीकानेर जिले में दो शिविर सम्पन्न हुए। डूंगरगढ़ तहसील के बरजागंसर गांव में आयोजित शिविर में बरजागंसर, लखासर, झंझेऊ, जाखासर, केऊ, नौसरिया, निगसरिया, नारसीसर, आलसर, पुन्दलसर, सेरूणा, आशापुरा, भेलू आदि गांवों से 115 राजपूत बालकों ने भाग लिया। 1 से 4 सितम्बर तक आयोजित इस शिविर का संचालन गुलाबसिंह आशापुरा ने किया। जयसिंह, सवाईसिंह बरजांगसर तथा महंत बिशनसिंह जी महाराज ने शिविर व्यवस्था में सहयोग किया। बीकानेर स्थित संघ कार्यालय नारायण निकेतन में 2-3 सितम्बर को बाल शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें 5-11 वर्ष के 52 बालकों ने संघ एवं क्षात्र संस्कृति का परिचय प्राप्त किया। चन्द्रवीरसिंह गोकुल ने शिविर का संचालन किया।

गुजरात में भी इस दौरान तीन शिविर आयोजित हुए। मोरचंद प्रान्त के अवाणियां गांव की कन्या शाला में 2 से 4 सितम्बर तक आयोजित शिविर में 105 बालकों ने भाग लिया। शिविर का संचालन धर्मेन्द्रसिंह आम्बली ने छनुभा पच्छेगाम तथा हितेन्द्रसिंह नारी के सहयोग से किया। अहमदाबाद शहर प्रांत का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर नवा नरोड़ा गांव में अपोलो कॉलेज के एसएमएल कैम्पस में 31 अगस्त से 3 सितम्बर तक सम्पन्न हुआ, जिसमें 100 शिविरार्थियों ने अनिरुद्ध सिंह काणेटी के संचालन में प्रशिक्षण लिया। पूर्णचन्द्र सिंह छेल्ली गोडी, अर्जुनसिंह आसारवा, करणसिंह वलासना, अनरसिंह मीदूड़ा, भूपेन्द्रसिंह, प्रतापसिंह आदि ने व्यवस्था में सहयोग किया। गांधीनगर की माणसा तहसील में शिविर का आयोजन पडुस्मा गांव की पाठशाला में हुआ, जिसमें आसपास के 22 गांवों से 280 बालक उपस्थित रहे। 1 से 3 सितम्बर तक आयोजित इस शिविर में पडुस्मा गांव से महिलाओं ने भी शिविर की विभिन्न गतिविधियों का शिविर स्थान पर आकर अवलोकन किया। शिविर का संचालन दिग्विजयसिंह पलवाड़ा ने किया। बनासकांठा की थराद तहसील के वलादर में 8 से 10 सितम्बर तक शिविर हुआ जिसमें 200 से अधिक शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन दिग्विजय सिंह पलवाड़ा ने अजीतसिंह कुणधेर डूगरसिंह चारड़ा आदि के सहयोग से किया। वरिष्ठ स्वयंसेवक पदमसिंह रामसर का भी सानिध्य मिला। अंतिम दिन सहयोगियों का स्नेहमिलन रखा गया। भावनगर में 9 व 10 सितम्बर को बाल शिविर का आयोजन हुआ जिसमें 5 से 11 वर्ष की आयु के 63 बालकों ने प्रशिक्षण लिया। इस प्रकार 31 अगस्त से 10 सितम्बर की अवधि में कुल 12 शिविर सम्पन्न हुए।

बैनाथा, लिखली, राजनौता, खिंयासरिया एवं उण्डखा में स्नेहमिलन

नागौर संभाग के लाडनूं प्रांत में बीदासर तहसील के ग्राम बैनाथा में 3 सितम्बर को श्री क्षत्रिय युवक संघ का स्नेहमिलन आयोजित हुआ। बैनाथा में इस माह 16 वर्षों के अंतराल से संघ का शिविर पुनः आयोजित हो रहा है, उसी की तैयारी में स्नेहमिलन रखा गया था। मंगलाचरण से कार्यक्रम के प्रारम्भ के पश्चात् नागौर संभाग प्रमुख शिम्भुसिंह आसरवा ने बताया कि संघ आज समाज की आवश्यकता है। हमें हर फिसलन से स्वयं को बचाते हुए समाज में संघ कार्य को करना है। समाज को मातृवत मानकर उसकी सेवा को ही अपना ध्येय बनाना है। कार्यक्रम में प्रांत प्रमुख विक्रमसिंह ढींगसरी, नन्दसिंह बेड़, बेगसिंह दूंकर, थानसिंह, प्रेमसिंह, महावीरसिंह बैनाथा सहित अनेकों स्वजातीय बंधु सम्मिलित थे। कार्यक्रम का संचालन नत्थूसिंह छापड़ा ने किया। जयपुर संभाग के दौसा प्रांत के लिखली गांव में रविवार 10 सितम्बर को स्नेहमिलन आयोजित हुआ। अक्टूबर माह में दौसा शहर में आयोजित होने वाले शिविर की तैयारियों के क्रम में इस स्नेहमिलन का आयोजन किया गया। मंगलाचरण एवं प्रार्थना के पश्चात् कुचामन प्रांत प्रमुख नत्थूसिंह छापड़ा ने उपस्थित समाज बंधुओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय देते हुए बताया कि पूज्य तनसिंह जी की समाज के प्रति पीड़ा ने ही आज सभी को यहां एकत्रित किया है। कार्यक्रम को गजेन्द्रसिंह बरवाली ने भी संबोधित किया। स्नेहमिलन में गांव के शिविर किए हुए बालक उनके अभिभावक तथा परिजनों के साथ ही अनेकों समाज-बंधु उपस्थित हुए तथा संघ की संस्कार प्रणाली को जाना।

➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

खिंयासरिया

संपादकीय

'नकारात्मक पहलु है विरोध'

विरोध एक नकारात्मक पहलु है। नकारात्मकता किसी प्रकार का सृजन नहीं करती और सृजन के अभाव में विरोध विरोधी को खाकर स्वयं को खाता है। पूज्य तनसिंह जी ने अपनी पुस्तक समाज चरित्र में समाजवाद के बारे में पूर्व घोषणा करते हुए इस बात को स्पष्ट किया है कि समाजवाद सृजन नहीं करता बल्कि मौजूद व्यवस्था के विध्वंश की बात करता है ऐसे में यह एक दिन समाप्त हो जाएगा और हम देख रहे हैं कि आज समाजवाद दर्शन के विद्यार्थियों के अध्ययन की विषय वस्तु मात्र बनकर रह गया है। श्रद्धेय आयुवानसिंह जी ने भी ऐसी ही एक नकारात्मक प्रवृत्ति घृणा के बारे में लिखा है कि घृणा एक नकारात्मक शक्ति है जो घृणास्पद के समाप्त होने पर स्वयं को खाकर अपनी क्षुधा शांत करती है। विरोध भी इसी प्रकार का नकारात्मक साधन है। दुर्भाग्य से हमने लोकतांत्रिक व्यवस्था में विरोध को ही हमारा साधन बना रखा है। हम जीतने या जीताने की अपेक्षा हराने में ज्यादा विश्वास करते हैं और उसी का परिणाम है कि वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनमानस में अपेक्षाकृत अधिक विश्वसनीय होने के बावजूद हम उचित स्थान नहीं बना पाते। प्रारंभ में हमने कांग्रेस को हराने का बीड़ा उठाया और स्वतंत्र भारत में अधिकांश समय विपक्ष में बैठे रहे। कालांतर में जिस विपक्ष में हम बैठे थे वह विपक्ष अब सत्ता पक्ष बना तो हम फिर हराने की बात करने लगे। विरोध करने की बात करने लगे। हराने की बात करने का दुष्प्रभाव यह होता है कि हम जिसको हराते हैं वह जो हमारा विरोधी होता ही है लेकिन हमारे विरोध के कारण जो जीतता है वह भी हमारे सहयोग की कीमत नहीं मानता क्यों कि हमने उसको जीताने के लिए सहयोग नहीं किया बल्कि उसके विरोधी को हराने के लिए सहयोग किया है। इस प्रकार हमारा लक्ष्य उसको जीताना नहीं बल्कि उसके विरोधी का हराना था, उसकी जगह कोई और होता तो वह जीतता। इस प्रकार हमारा समस्त प्रयास नकारात्मक होने के कारण अपनी कीमत नहीं वसूल पाता। हमारी यही प्रवृत्ति हमें मजबूर मतदाता का स्वरूप प्रदान करती है जिससे हम एक पक्ष का विरोध करने को मजबूर हैं और विरोध के कारण सहयोग का अहसास भी नहीं करवा पाते। ऐसे में हमें हमारी रणनीति बदलनी चाहिए और हराने की अपेक्षा जीताने की बात करनी प्रारम्भ करनी चाहिए। हमारा लक्ष्य यह नहीं होना चाहिए कि हमें इस दल या व्यक्ति को हराना है बल्कि यह होना चाहिए कि हमें अमुक दल या व्यक्ति को जीताना है। स्पष्ट रूप से उदाहरण के रुप में देखें तो आजादी के बाद हमने कांग्रेस को हराने की बात प्रारम्भ की और हमारी इस बात के कारण कांग्रेस के सामने जो भी आया हम उसके साथ होते रहे। परिणाम स्वरूप कांग्रेस ने हमें अपना स्थायी विरोधी मान लिया वहीं रामराज्य परिषद, स्वतंत्र पार्टी, जनता पार्टी, जनता दल और फिर भारतीय जनता पार्टी हमें कितना अपना मान पाई यह हमारे सामने है। विगत कुछ वर्षों से भारतीय जनता पार्टी सत्ता में आने लगी और क्योंकि हम विरोध की नकारात्मक वृत्ति के कारण इस पार्टी को पनपा रहे थे इसलिए यहां भी हमारी कीमत उतनी ही होनी लगी जो एक नकारात्मक पहलु की होती है। हमारे नेता यहां उपेक्षित होने लगे और वे अपनी अपेक्षा का बदला लेने के लिए या अपनी पूछ बढ़वाने के लिए भाजपा विरोध को सामाजिक स्वरूप देने लगे और हम उनकी बातों में आकर पुनः विरोध करने लगे। इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि हम भाजपा के समर्थक बने रहें या हमारी उपेक्षा के बावजूद उसका पक्ष लेते रहें लेकिन समझदार व्यक्ति कदम उठाने से पहले उसे रखने का स्थान सुनिश्चित करता है। उसी प्रकार हमें भी यह विचार करना चाहिए कि हम भाजपा का विरोध कर समर्थन किसका करने जा रहे हैं और यदि यह तय हो जाए कि इसका समर्थन करना है तो फिर समर्थन करने की या उसे जीताने की बात करें न कि भाजपा को हराने की। यदि हम हमारे द्वारा निश्चित किए व्यक्ति या दल का समर्थन करेंगे और जिताने का प्रयास करेंगे तो विरोधी तो स्वाभाविक रूप से हारना ही है। लेकिन यह सब करने से पहले यह भी विचार कर लें कि हमारे समाज में क्या ऐसे किसी आह्वान को अधिसंख्य रूप से स्वीकार करने की वृत्ति है? क्या समाज किसी एक के आह्वान को सामाजिक आह्वान मानने को तैयार है? निश्चित रूप से उत्तर ना में ही आएगा ऐसे में पूरे दल को हराने या जीताने की बात करने की अपेक्षा हमें व्यक्तियों का चुनाव करना चाहिए एवं हमारे पक्ष के व्यक्तियों को जिताने का प्रयास करना चाहिए। यह रणनीति हर चुनाव क्षेत्र की अलग-अलग हो सकती है और इसमें अनेक स्थानीय परिस्थितियां भी कारक होती हैं। इसके अतिरिक्त तो जीतने भी हराने या विरोध करने के आह्वान होते हैं वे व्यक्तिगत पूछ बढ़ाने के साधन मात्र हैं। इसमें वास्तव में विरोध नहीं बल्कि विरोध की धमकी मात्र है जो कोई न कोई कीमत वसूल कर शांत हो जाएगा। इसलिए यदि हमें वास्तव में किसी पार्टी विशेष की गुलामी त्यागनी है तो योजना बनाकर छोटे-छोटे लक्ष्य बनाकर आगे बढ़ना चाहिए और तब तक पूरे राज्य या क्षेत्र में विरोध कर एक साथ उलटफेर करने के लोभ का संवरण करना चाहिए अन्यथा हमारी सारी कवायद ढाक के तीन पात सिद्ध होगी।

बाड़मेर कर्मचारी प्रकोष्ठ की बैठक

बाड़मेर जिले में संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ की बैठक 3 सितम्बर को भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम में आयोजित की गई। प्रकोष्ठ के केन्द्रीय समन्वयक कृष्णसिंह राणीगांव के निर्देशन में सम्पन्न बैठक में अलग-अलग विभागों से प्रतिनिधि रूप में कर्मचारी बंधु शामिल हुए। बैठक में कर्मचारी प्रकोष्ठ के उद्देश्यों की जानकारी दी गई एवं विभागवार सदस्यता अभियान का दायित्व दिया गया। 24 सितम्बर तक सदस्यता अभियान चलाया जाएगा एवं तदुपरांत अक्टूबर माह के प्रथम सप्ताह में दो दिवसीय शिविर सदस्य कर्मचारी साथियों का रखा जाएगा। बैठक में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु मार्गदर्शन कक्षाएं संचालित करने के लिए ठोस धरातल तैयार करने की आवश्यकता जताई गई। इस बैठक में 20 नए सदस्यों ने सदस्यता आवेदन भरकर प्रस्तुत किए।

बांदीकुई में प्रतिभा सम्मान समारोह

श्री राजपूत सभा बांदीकुई का प्रतिभा सम्मान समारोह 3 सितम्बर को आयोजित हुआ जिसमें वर्ष 2017 में उत्कृष्ट परिणाम देने वाले विद्यार्थियों, सेवानिवृत अधिकारियों, कर्मचारियों व नव चयनित कार्मिकों का सम्मान किया गया। मुख्य अतिथि गिरिराजसिंह लोटवाड़ा ने प्रतिभावों का मनोबल बढ़ाने हेतु ऐसे समारोह आवश्यक बताए। सेवानिवृत न्यायाधीश भगवानसिंह चौहान ने आर्थिक रूप से कमजोर प्रतिभाओं के संबलन की व्यवस्था का सुझाव दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुशलसिंह बैजूपाड़ा ने की वहीं संचालन शक्तिसिंह राजावत ने किया।

मोटिवेशनल कार्यक्रम 'रफ्तार' आयोजित

मोटिवेशनल स्पीकर एवं विजन कोच भूपेन्द्रसिंह सिरसूं द्वारा जयपुर के वैशालीनगर स्थित छवि होटल में मोटिवेशनल कार्यक्रम 'रफ्तार' आयोजित किया गया। इसमें सैंकड़ों शिक्षक, शिक्षिकाओं एवं व्यवसायियों ने भाग लिया। 3 घंटे के कार्यक्रम में भूपेन्द्रसिंह ने माइंड पावर पर बनाए गए कार्यक्रम की गतिविधियां करवाई एवं लोगों को मानसिक दर्शन के बारे में बताया। अगले माह 2 दिन का ट्रेनिंग प्रोग्राम बिकम विजनरी होने जा रहा है।

खरी-खरी

'विचारों की लड़ाई हथियारों से'

अपने विचार के विस्तार एवं विरोधी विचार के दमन के लिए हथियारों का इस्तेमाल पश्चिम का तरीका है। चाहे इस्लामिक विचारधारा हो चाहे ईसाई विचारधारा। इन्होंने अपने विस्तार के लिए हथियारों का सहारा लिया और दमन एवं हिंसा के बल पर विरोधी विचारों को मिटाकर अपने आपको पनपाया। इस हेतु इन्होंने अनेक घृणित एवं नृशंस हत्याकांडों का सहारा लिया। भारत में यह बात कल्पनातीत थी। भारत के अतीत के इतिहास को उठाकर देखें तो इसके अनेक सुदर उदाहरण मिल सकते हैं जब परस्पर विरोधी विचारों को भी राज्य का संरक्षण मिला और वे अपनी क्षमतानुसार फले-फूले। भारत में कभी जिहाद शब्द का ईजाद नहीं हुआ क्यों कि यहां ऐसा विचार कल्पनातीत था। बौद्ध धर्म की आंधी को भी शंकराचार्य जैसे मनीषी ने विचारों की लड़ाई द्वारा रोका एवं कभी भी हिंसा, दमन एवं बल प्रयोग का सहारा नहीं लिया। यही भारतीयता थी और यही भारतीयता है। इसके इतर यदि कोई भारतीयता कही जा रही है तो उस भारतीयता का आदर्श भारत नहीं हो सकता। भारत में तो चार्वाक को भी ऋषि की उपाधि दी गई है। चार्वाक को गोली मारने का कोई उदाहरण भारत में नहीं पाया जाता क्यों कि भारत को अपनी भारतीयता पर भरोसा था, अपनी भारतीयता की श्रेष्ठता पर भरोसा था और वह भरोसा प्रकट भी हुआ। यहां आने वाला प्रत्येक विदेशी विचार अंततोगत्वा भारत का विचार बनकर रह गया क्यों कि भारतीयता का मतलब ही विचारों को पचाने की अद्भुत शक्ति है। हालांकि भारत की सहनशीलता का कुछ विरोधी विचारों ने दुरुपयोग किया एवं उसके कारण भारतीयता को अनेक कष्टों का भी सामना करना पड़ा लेकिन उसके बावजूद भारत ने कभी भारतीयता नहीं छोड़ी। विचारों की लड़ाई में हथियारों का सहारा नहीं लिया और उसी का परिणाम था कि मध्यकालीन धार्मिक कट्टरता के दौर में भी कोई मुस्लिम किसी हमीर की शरण लेता था। कोई हाकिम खां सूर महाराणा प्रताप का सेनापति हुआ करता था तो कोई अकबर अपनी संतान की सुरक्षा के लिए अपने पिता औरंगजेब की अपेक्षा दुर्गादास जी को अधिक विश्वसनीय मानता था। लेकिन आजादी के बाद भारतीयता का पश्चिमी संस्करण भारत में भी पनपा है और विगत कुछ वर्षों में तेजी से फला फूला है। यह संस्करण यूरोप के इतिहास में पुनर्जागरण काल के बाद उपजे राष्ट्रवाद को आदर्श मॉडल मानता है और उसी राष्ट्रवाद को भारत की मूल भारतीयता का विकल्प बनाना चाहता है। इसीलिए तो विरोधी विचारकों के वैचारिक थोथेपन को वैचारिक तरीके से निपटने की अपेक्षा हथियारों का उपयोग कर समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। कम से कम भारतीयता के नाम पर तो भारत के मूल स्वभाव को न मारा जाए नहीं तो भारतीयता ही नहीं बचेगी।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	21.09.2017 से 24.09.2017	**बड़ला बासनी** (जोधपुर)। तिंवरी से 15 किमी दूर।
2.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	21.09.2017 से 24.09.2017	**मेलूसर** (चुरू), सरदारशहर व रतनगढ़ से रेल सेवा।
3.	मा.प्र.शि. (बालिका)	27.09.2017 से 03.10.2017	कल्ला रायमलोत बोर्डिंग हाउस, **सिवाणा** (बाड़मेर)।
4.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	सारुण्डा, नोखा से करणू-चाडी मार्ग पर स्थित।
5.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	**जोधियासी**, नागौर।
6.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	**खानपुर** (नागौर), लाडनूं सुजानगढ़ मार्ग पर स्थित।
7.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	आयुवान निकेतन, **कुचामन सिटी** (नागौर)।
8.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	**केकड़ी** (अजमेर)। सम्पर्क सूत्र : विजयराजसिंह जालिया 9602246116 पृथ्वीसिंह सांपणदा : 7742666287
09.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	एकलिंग नाथ मंदिर, **भीमाणा** (सिरोही) स्वरूपगंज आबूरोड मार्ग पर भीमाणा बस स्टैण्ड उतरें।
10.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	भोपालसिंह जी का कृषि फार्म **राउता** (जालोर) बागोड़ा गुड़ामालानी सड़क मार्ग पर बागोड़ा से 7 किमी राऊता।
11.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	पाबूजी का मंदिर **महाबार** (बाड़मेर)।
12.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	**जयसिंधर** (बाड़मेर) गडरारोड से बस उपलब्ध।
13.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	**भैंसड़ा** (जैसलमेर)। पोकरण से बस उपलब्ध। झिंझनियाली, फतेहगढ़, जैसिंधर से भी उपलब्ध।
14.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	**सोनू** (जैसलमेर)। रामगढ़ जैसलमेर मार्ग पर स्थित।
15.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.09.2017 से 01.10.2017	**डेलासर**। जोधपुर जैसलमेर मार्ग पर चांदन या सोढ़ांकोर उतरें। वहां से साधन उपलब्ध।
16.	बाल शिविर	30.09.2017 से 01.10.2017	तनाश्रम, शहीद पूनमसिंह कॉलोनी, **जैसलमेर**।
17.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	30.09.2017 से 02.10.2017	गरोड़िया-सोपान फार्म हाऊस **साणंद** गुजरात। साणंद से 20 किमी दूर।
18.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	30.09.2017 से 02.10.2017	**काणेटी**। प्राथमिक शाला, साणंद से 2 किमी दूर।
19.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	30.09.2017 से 02.10.2017	परमहंस आश्रम **कड़ा**। कड़ा गोड़वा रोड, मेहसाणा।
20.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	08.10.2017 से 11.10.2017	**ददरेवा**। जिला चुरू।
21.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	08.10.2017 से 11.10.2017	**जोधयासी**। नागौर से कातर रोड पर 30 किमी दूर।
22.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	08.10.2017 से 11.10.2017	**भण्डारी**। डीडवाना से साधन उपलब्ध।
23.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	08.10.2017 से 11.10.2017	**धनोपमाता**। शाहपुर केकड़ी मार्ग पर स्थित।
24.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	08.10.2017 से 11.10.2017	**जैसलमेर**। राजपूत छात्रावास, जैसलमेर।
25.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	08.10.2017 से 11.10.2017	**महरोली**। जिला सीकर
26.	मा.प्र.शि. (बालक)	08.09.2017 से 14.10.2017	**बहादुरपुरा दूधवा**। बाड़मेर चौहटन सड़क मार्ग पर दूधवा से 5 किमी दूर उ.प्रा. विद्यालय।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज, काली जूती व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें। **राजेन्द्रसिंह बोबासर**, शिविर कार्यालय प्रमुख

भाव प्रवाह (दो)

भाव-प्रवाह की अविरल धारा,
लगी उमड़ने नवल भेष में।
नाना रूप धरे हरे पल में,
बहती देखो नवोन्मेष में।।1।।
आशा है जीवन का संबल,
सारे जग के इस पर डेरे।
कहां-कहां भटके सारा दिन,
आते-जाते सांझ-सबेरे।।2।।
नाना रूप धरे है धरती,
छलक रहे हैं ताल-तलैया।
कोई खड़ा हाथ थामे है,
कोई डाले है गलबहिया।।3।।
प्रतिस्पर्धा प्रगति की वाहक,
आश जगी है सबके मन में।
दे धक्का आगे जाने की,
उत्कट इच्छा हर जन-मन में।।4।।
मौका परस्त जमे बैठे हैं,
दशों-दिशा में पैर पसारे।
मीठा-मीठा वे गटकेंगे,
बचे जो खारा वह तू खारे।।5।।
यदि कभी मैं तुम्हें पुकारूं,
थोड़ा ध्यान इधर भी देना।
दुविधा में गर नाव फंसी तो,
पड़ सकता है धक्का देना।।6।।
माता-पिता का पहला फर्ज है,
भावी पीढ़ी का रखें ध्यान।
पुचकारें तो दुत्कारें भी,
तभी बचेगी अपनी शान।।7।।
बेसुर में जब बजे बांसुरी,
दोष दूसरे का क्यों मानें।
फन में अधकचरा होने पर,
ऐसा ही होना था जानें।।8।।
सावन मन-भावन होता है,
झड़ी लगे पावस की प्यारी।
मोर-पपीहे पंछी गायें,
दादुर की टर्राहट न्यारी।।9।।
खतरों से कभी तू खोप न खा,
खुलकर खतरों से खेल।
संघर्ष का नाम ही जीवन है,
बंदे तू विपदा झेल।।10।।
बक-बक मत कर,
औरों की सुन।
मत बौरा इतना,
भीतर भी गुन।।11।।
बद से बदतर हुई जिन्दगी,
मानवता-ममता को खोकर।
बिना सहारे कैसे गुजरे,
कंटकमयी जिन्दगी रो कर।।12।।
स्वपनिल है संसार यह सारा,
विस्मयकारी इसकी हरकत।
बिना आज्ञा ऊपर वाले की,
पत्ता भी फर-फर नहीं फरकता।।13।।
अजर-अमर नहीं तू इंसां,
इंसान की औलाद है।
कमतर नहीं किसी से तू भी।
वज्र रूपी फौलाद है।।14।।
मैं जीऊं या मरूं इसी पल,
इसकी कोई नहीं है चर्चा।
हंसता रहूं सदा ता जीवन,
नहीं बांटना कोई पर्चा।।15।।
अंत-पंत जो पा ले मंजिल,
भूला-भटका नहीं कहाता।
कर पार धार मारले बाजी,
शूर-वीर वही कहलाता।।16।।
आदमियत अभी मरी नहीं है,
अब भी जिंदा है कुछ अंश।
होठों पर मुस्कान खिली है,
हंस-हंस झेल रहे हैं दंश।।17।।
भाव-प्रवाह बूते से बाहर,
इन पर जोर नहीं हैं अपना।
स्वमर्जी से आते-जाते,
जैसे आता-जाता सपना।।18।।
शत-प्रतिशत दे रहा दिखाई,
'जीवो-जीवस्य भोजनम्' का नारा।
सारे जग में शौर मचा है,
वह काटा-वो काटा-मारा।।19।।
भूख का नंगा-नाच देखकर,
मैं गिरा धरा पर होश गंवाकर।
फिर चेतन हो लिखने बैठा,
हिम्मत का सान्निध्य पाकर।।20।।
राणा-दुर्गा वीर शिवा से,
जंग में जूझे वीर महान।
कीर्ति-पताका फहरे नभ में,
बजे दुंदुभी-गूंजे यशगान।।21।।
विनय कुटीर आसरा मेरा,
टीन डले टप्परों का डेरा।
मैं दर पर बैठा आश संजोये,
तू भी मेरा मैं भी तेरा।।22।।

- **रूपसिंह राठौड़**
विनय कुटीर, कांटा-खिरणी
फाटक रोड, झोटवाड़ा, जयपुर

सब इंस्पेक्टर में चयन

धमोरा निवासी अवधेशसिंह का सीआईएसएफ में सब इंस्पेक्टर के रूप में चयन हुआ है। सोशल मीडिया में सामाजिक विषयों पर लिखने वाले अवधेश सिंह इसके लिए पूरे परिवार को सहयोग के लिए साधुवाद देते हैं।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
कृष्णा नगर-I, लालकोठी स्कीम, जयपुर
मो. 9636977490, 0141- 4015747
website : www.springboardindia.org

सवाईसिंह धमोरा नहीं रहे

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक सवाईसिंह धमोरा का निधन 12 सितम्बर की रात को हो गया। चैत्र कृष्ण नवमी संवत् 1984 तदनुसार 15 मार्च 1928 को जन्मे सवाईसिंह ने साढ़े नवासी वर्ष का पूर्ण सक्रियता का जीवन जीया। स्वर्गवास के कुछ समय पूर्व तक भी अपनी स्वाभाविक सक्रियता बनाए रखी। श्री क्षत्रिय युवक संघ से वे प्रारम्भ से ही जुड़ गए थे। सन् 1947 में 19 से 26 अक्टूबर तक गोपालपुरा (चुरू) में सम्पन्न हुआ शिविर उनका प्रथम शिविर था, जो संघ का प्रारम्भिक काल था। अपनी 65 वर्ष की आयु में भी उन्होंने भांवता (अजमेर) में सम्पन्न उच्च प्रशिक्षण शिविर पूरा किया था। भू-स्वामियों के सामने जब समस्या आई तो संघ द्वारा किए गए भू-स्वामी आंदोलन में भी आप पूरी तरह सक्रिय रहे और जेल भी गए। आंदोलन के पश्चात् भी सामाजिक हित के संघर्ष में सहयोगी बने रहे। सन् 1960 में संघशक्ति पत्रिका प्रारम्भ की गई तब आपको उसका सम्पादक का दायित्व सौंपा गया। फरवरी 1963 में आकाशवाणी में नौकरी लग जाने के कारण आगे संपादक का दायित्व पूज्य नारायणसिंह जी को सौंपा गया। संघशक्ति का 'आदि संपादक' होने के गौरव का आपको गर्व था। आप साहित्यिक अभिरुचि वाले थे और गद्य तथा पद्य दोनों ही विद्याओं में आपको महारत प्राप्त थी। साहित्य में उनके प्रिय विषय थे इतिहास तथा राजस्थानी भाषा। आपने इन दोनों प्रिय विषयों के माध्यम से आकाशवाणी के जयपुर केन्द्र के कार्यक्रमों को एक स्तर प्रदान किया। वे स्पष्टवादी थे। अपने विचारों और धारणाओं से अलग सहज रूप में कुछ सहन नहीं करते थे। नाराजगी को भी छिपाकर नहीं रखते थे, अगले के मुंह पर ही प्रकट कर देते थे। उनका जीवन सादगी पूर्ण था। अपनी स्वाभाविक ग्रामीण वेशभूषा को सदैव अपनाए रखा। उनके दो पुत्र और एक पुत्री का भरा पूरा परिवार है। उनकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास बहुत जल्दी ही हो गया था, पर उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया। वे मानते थे कि स्त्रियां विधवा होने पर जैसा जीवन व्यतीत करती हैं तो विधुर पुरुष को भी वैसा ही जीवन जीना चाहिए। समाज ने उनके रूप में एक जुझारू सामाजिक भाव वाला व्यक्ति खो दिया है। भगवान उन्हें शांति प्रदान करे यही अभिलाषा।

दुःखद देहावसान

हरिसिंह भाटी संग्रामसिंह की ढाणी भैंसड़ा का 13 सितम्बर को देहावसान हो गया। चैन्नई में व्यवसायरत हरिसिंह चैन्नई की राजपूत परिषद के लगातार अध्यक्ष रहे। वे वहां होने वाली सभी सामाजिक गतिविधियों के केन्द्र थे। उन्होंने चैन्नई में संघ के दो बालिका एवं तीन बालक शिविर आयोजित करवाए। उनके निधन से चैन्नई में समाज की गतिविधियों में गंभीर क्षति हुई है। भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे एवं परिवार को इस आघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

प्रतिभावान खिलाड़ी नरेन्द्रसिंह सोढ़ा का देहावसान

मूल रूप से जैसलमेर के रतन महाराज का तला निवासी एवं वर्तमान में सूरत में रह रहे मानसिंह सोढ़ा के पुत्र नरेन्द्रसिंह का श्रीलंका में एक होटल के स्वीमिंग पूल में डूबने से देहांत हो गया। 12 वर्षीय नरेन्द्रसिंह वहां अंडर 17 क्रिकेट मैच खेलने गया था। होनहार खिलाड़ी नरेन्द्र अपने अंतिम मैच में एक विकट लेकर बैटिंग में नाबाद रहा एवं जीते गए मैच का फिनीशर रहा। अपने होनहार सदस्य को खोने वाले परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना।

दिवगंत शिक्षक की प्रतिमा का अनावरण

जोधपुर जिले में बेलवा के निकट जीयाबेरी गांव के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के वरिष्ठ अध्यापक बजरंगसिंह भाटी का विगत 27 जुलाई को देहांत हो गया था। विद्यार्थियों में अत्यन्त लोकप्रिय शिक्षक के देहांत पर विद्यार्थियों के साथ-साथ ग्रामवासी भी गमगीन हुए थे। अपने लोकप्रिय शिक्षक की याद को स्थायी बनाने के लिए विद्यार्थियों ने आपसी सहयोग से राशि एकत्र कर विद्यालय प्रांगण में स्वर्गीय बजरंगसिंह की प्रतिमा लगवाई। 6 सितम्बर को गांव के मौजीज लोगों एवं दिवगंत शिक्षक के परिवारजनों की उपस्थिति में मूर्ति का अनावरण किया गया। इस अवसर पर सभी ने अपने प्रिय शिक्षक को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि दी।

शिक्षक दिवस पर सम्मानित

नारायणसिंह तंवर

मैराजसिंह सांकड़ा

रतनसिंह बडोड़ागांव

विगत दिनों 5 सितम्बर को जैसलमेर से हमारे समाज के तीन शिक्षक क्रमशः राष्ट्रीय स्तर, राज्य स्तर एवं जिला स्तर पर सम्मानित किए गए। रा.उ.प्रा.वि. पोकरपुरा (रामदेवरा) में कार्यरत शिक्षक नारायणसिंह तंवर का उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रपति द्वारा आयोजित समारोह में सम्मानित किया गया वहीं रा.उ.मा.वि. लंवा में वरिष्ठ अध्यापक के रूप में कार्यरत मैराजसिंह सांकड़ा को राज्यपाल द्वारा आयोजित कार्यक्रम में राज्य स्तर पर सम्मानित किया गया। राष्ट्र एवं राज्य स्तर पर सम्मानित होकर क्षेत्र का सम्मान बढ़ाकर पोकरण लौटने पर उनका भव्य स्वागत किया गया। इसी प्रकार जिला प्रशासन द्वारा जिला स्तर पर आयोजित कार्यक्रम में रा.उ.मा.वि. मूलाना में कार्यरत व्याख्याता रतनसिंह बडोड़ा गांव को सम्मानित किया गया। इनका भी गांववासियों एवं विद्यालय प्रशासन द्वारा अभिनंदन किया गया।

पूजा ठाकुर को मिला गोल्ड मेडल

महोबा के मकरबई निवासी पूर्व प्रधान राजेन्द्रसिंह की पुत्री पूजा ठाकुर महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से एमएलएम में 68.75 फीसदी अंक हासिल कर विश्वविद्यालय टॉपर बनी है। वे पंडित मोतीलाल नेहरू विधि महाविद्यालय छतरपुर की नियमित छात्रा रहीं। पूजा ठाकुर ने इलाहाबाद हाईकोर्ट में अपना रजिस्ट्रेशन करवा रखा है।

डॉ. कमलसिंह को शिक्षक श्री पुरस्कार

उदयपुर की बी.एन. इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साईंस के सह आचार्य डॉ. कमलसिंह बेमला को अंतर्राष्ट्रीय समता मंच 'समरसता' नई दिल्ली व इंडो नेपाल समरसता ऑर्गेनाइजेशन के संयुक्त तत्वावधान में शिक्षक दिवस पर शिक्षक श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डॉ. बेमला इससे पहले भी फार्मेसी शिक्षा शोध विषय में लिखी सत्रह पुस्तकों एवं सौ से अधिक लेखों के कारण अनेक बार सम्मानित हो चुके हैं।

मनोहरसिंह बने नगरपालिका उपाध्यक्ष

नगरपालिका चुनावों में भाजपा से बागी होकर अध्यक्ष पद पर निर्दलीय चुनाव लड़ मात्र 3 वोटों से हारने वाले मनोहरसिंह रूपपुरा 6 सितम्बर को हुए उप चुनावों में पूरी जिला भाजपा टक्कर लेते हुए निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में उपाध्यक्ष चुने गए। उनके जीतने पर क्षेत्र के समाज बंधुओं ने खुशी मनाई।

नम्रता कंवर बनीं सेना में अफसर

मूल रूप से चित्तौड़गढ़ के बांसी के रहने वाले एवं जोधपुर विश्वविद्यालय में फिजिकल एजुकेशन में डायरेक्टर पद से सेवानिवृत वर्तमान में जोधपुर में निवासरत लोकेन्द्रसिंह शक्तावत की पुत्री नम्रता कंवर थल सेना में अफसर बनी है। उनकी चैन्नई में पासिंग आउट परेड में माता-पिता एवं बाबोसा सेवानिवृत ग्रुप कैप्टन गजेन्द्रसिंह भी उपस्थित थे।

नवरात्रि विशेष

21 सितम्बर से नवरात्रा प्रारम्भ हो रहे हैं। हम सभी देवी की पूजा करेंगे। लेकिन आखिर क्या है देवी का स्वरूप? भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में बताया कि- प्रकृत्ति रूपी माता की गर्भ में मैं बीज रूप में स्वयं को स्थापित करता हूं। अर्थात् यह प्रकृत्ति ही माता का स्वरूप है। प्रकृति देवी है और पुरुष भगवान है। हमारे यहां प्रकृति और पुरुष दोनों की उपासना का प्रचलन है। प्रकृति ही पुरुष की ओर अग्रसर करती है। माता ही पिता का परिचय करवाती है इसलिए प्रारम्भ माता की पूजा से ही होता है। शनैः शनैः माता अपने पुत्रों को पिता की ओर अग्रसर करती है। हमारे लिए प्रकृत्ति अनेक रूपों में प्रकट होती है। दुर्गा सप्तशती में मां के अनेक रूप बताए हैं जो प्रकृति के ही विभिन्न रूप हैं। यदि हम प्रकृति के इन विभिन्न रूपों की मातृस्वरूपा समझकर अर्चना करते हैं तो यही देवी पूजा है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज को मातृस्वरूपा मानकर उसकी अर्चना की बात करता है, सेवा की बात करता है। संघ के दर्शनानुसार समाज की सेवा की जा सकती है विकास या उत्थान नहीं क्योंकि समाज मातृस्वरूपा प्रकृति का ही अंग है और माता की सेवा व अर्चना ही की जाती है। यही भाव प्रकृति के सभी स्वरूपों के प्रति हमारा हो जाए तो यही प्रकृति हमें पुरुष की ओर अग्रसर कर देती है। श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी भाव का निर्माण करता है। नवरात्रा के अवसर पर इस बार प्रस्तुत है मच्छंकराचार्य कृत मातृ स्वरूपा प्रकृति की अर्चना-

भवान्यष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता, न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृतिर्ममैव, गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।1।।

● हे भवानि! पिता, माता, दाता, पुत्र, पुत्री, भृत्य, स्वामी, स्त्री, विद्या और वृत्ति इनमें कोई भी मेरा नहीं है, हे देवी! एक मात्र तुम्हीं मेरी गति हो।।

भवाब्धावपारे महादुःखभीरूः, पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमतः।
कुसंसारपाशप्रबधः सदाहम्, गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।2।।

● मैं अपार भवसागर में पड़ा हूं, कामी, लोभी, मतवाला तथा घृणा योग्य संसार के बंधनों में पड़ा हूं, हे भवानी! अब एकमात्र तुम्हीं मेरी गति हो।

न जानामि दानं न च ध्यानयोगं, न जानामि तंत्रं न च स्तोत्रमंत्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगम्, गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।3।।

● हे देवी! मैं न तो दान देना जानता हूं और न ध्यान मार्ग का ही मुझे पता है, तंत्र और स्तोत्र मंत्रों का भी मुझे ज्ञान नहीं है, पूजा तथा न्यास आदि की क्रियाओं से तो मैं एकदम कोरा हूं, अब एकमात्र तुम्ही मेरी गति हो।

न जानामि पुण्यं न जानामितीर्थं, न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं चापि मातः, गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।4।।

● न पुण्य जानता हूं न तीर्थ, न मुक्ति का पता है न लय का। हे मातः! भक्ति और व्रत भी मुझे ज्ञात नहीं है, हे भवानि! अब केवल तुम्हीं मेरा सहारा हो।

कुकर्मी कुसंगी कुबुद्धिः कुदासः, कुलाचारहीनः कदाचारलीनः।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहम्, गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।5।।

● मैं कुकर्मी, बुरी संगति में रहने वाला, दुर्बुद्धि, दुष्टदास, कुलोचित सदाचारहीन, दुराचरणपरायण, कुत्सित दृष्टि रखने वाला और सदा दुर्वचन बोलने वाला हूं, हे भवानी! मुझ अधम की एकमात्र तुम्ही गति हो।

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं, दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये, गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।6।।

● मैं ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, सूर्य, चन्द्रमा तथा अन्य किसी भी देवता को नहीं जानता, हे शरण देने वाली भवानि! एक मात्र तुम्हीं मेरी गति हो।

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे, जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रवाहि, गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।7।।

● हे शरण्ये! तुम विवाद, विषाद, प्रमाद, परदेश, जल, अनल, पर्वत, वन तथा शत्रुओं को मध्य सदा ही मेरी रक्षा करो। हे भवानि! एकमात्र तुम्ही मेरी गति हो।

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो, महाक्षीणदीनः सदाजाडयवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहम्, गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।8।।

● हे भावनि! मैं सदा से ही अनाथ, दरिद्र, जरा जीर्ण, रोगी, अत्यन्त दुर्बल, दीन, गूंगा, विपद्ग्रस्त और नष्ट हूं, अब तुम्हीं एकमात्र मेरी गति हो।

(श्री मच्छंकराचार्य कृत)

(पृष्ठ एक का शेष)

प्रताप युवा शक्ति ने भी दिल्ली जाकर दी बधाई

शेखावाटी से...

अपने मंत्रिमंडल विस्तार के लिए जिन 9 लोगों का प्रधानमंत्री जी ने चयन किया उसमें योग्यता के उच्च पैमानों का अहसास इस बात से होता है कि दो ऐसे लोगों को केवल उनकी योग्यता के बल पर मंत्री बनाया गया है जो वर्तमान में सांसद भी नहीं हैं। ऐसी कठिन प्रतिस्पर्धा के बीच प्रधानमंत्री जी ने इनकी योग्यता को पहचाना एवं अपनी टीम में स्थान दिया। प्रधानमंत्री जी के इस चयन पर इनको जानने वाले हर व्यक्ति ने प्रसन्नता व्यक्त की। शेखावाटी से लेकर नागौर, बीकानेर, चुरू, जोधपुर, जयपुर, अजमेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जालोर, सिरोही, पाली आदि के साथ-साथ मेवाड़, बागड़ एवं हाड़ोती में भी बधाईयों के दौर प्रारम्भ हुए। इनकी लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 10 सितम्बर को मंत्री बनने के बाद पहली बार अपने संसदीय क्षेत्र पहुंचने पर जोधपुर रेलवे स्टेशन से लेकर इनके आवास तक की तीन किलोमीटर की दूरी पार करने में इनके काफिले को तीन घंटे से ज्यादा का समय लगा। ट्रेन तीन घंटे लेट होने के बावजूद मार्ग में लाडनूं, डीडवाना, डेगाणा, रैण, मेड़ता में इनका भव्य स्वागत किया गया। इन सब स्टेशनों पर ट्रेन का मात्र 2 से 5 मिनिट का ठहराव होने के बावजूद हर समर्थक इतने कम समय में भी स्वागत की रस्म अदा कर स्वयं को अभिभूत महसूस कर रहा था। जोधपुर में हुए भव्य स्वागत के बाद रामदेवरा के लिए प्रस्थान किया। जोधपुर से रामदेवरा के बीच चोखा, अरणा फांटा, 20 मील, बंबोर, आगोलाई, 30 मील, बालेसर, फलोदी रोड, 34 मील, सेखाला, सेतरावा, बावकान तालाब, खींयासरिया, देचू, मंडला, बेडिया, लवां आदि स्थानों पर स्वागत करने आए समर्थकों से मिलते हुए रात्रि 10 बजे रामदेवरा पहुंचे। वहां बाबा रामदेव की पूजा अर्चना कर रात्रि 12.00 बजे पोकरण पहुंच कर स्वागतोत्सुक हजारों समर्थकों से मिले। पोकरण में दो जगह स्वागत किया गया। बालेसर में भी विधायक बाबूसिंह के नेतृत्व में हजारों की संख्या में समर्थक मौजूद थे। खींयासरिया में शेरगढ़ के सभी स्वयंसेवकों ने स्नेहमिलन आयोजित कर स्वागत किया। जैसलमेर से समर्थक जोधपुर-जैसलमेर की सीमा पर ही पहुंच गए थे। इस प्रकार हर कार्यकर्ता सहयोगी एवं साथी ने अपने नेता को मिली नवीन जिम्मेदारी पर प्रसन्नता व्यक्त कर उनके जननायक होने का प्रमाण प्रस्तुत किया।

संघ...

स्वयंसेवकों के अलावा राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष गिरिराजसिंह लोटवाड़ा व मंत्री बलवीर सिंह हाथोज व उनके साथी, भवानी निकेतन शिक्षा समिति के अध्यक्ष दिलीपसिंह छापोली व उनके सहयोगी, कांग्रेस महासचिव सुनीता भाटी, बीज निगम के पूर्व अध्यक्ष धर्मेन्द्रसिंह राठौड़ सहित सैंकड़ों समाजबंधु उपस्थित रहे। संघशक्ति आने से पहले उन्होंने राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री से शिष्टाचार भेंट की एवं भारती भवन भी गए।

वफरासी...

जिससे भी मिलते हैं उसे अपना बना लेते हैं। जिसके साथ होते हैं सदैव उसके साथ बने रहते हैं और यही इनके संबंधों के विस्तार का कारण है।

(पृष्ठ दो का शेष)

गुरु शिखर...

आपने एक शूटर होते हुए भी कभी शिकार नहीं किया एवं शराब को नहीं छूआ। आपकी बड़ी पुत्री राजश्री भी अन्तरराष्ट्रीय शूटर तथा अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित है। पांच बार बीकानेर से लगातार निर्दलीय सांसद, पांच बार ओलम्पिक में तथा पांच बार विश्व एवं एशियाई शूटिंग (निशानेबाजी) प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करना अद्भुद, अकल्पनीय, अतुलनीय, आदरणीय व अनुकरणीय था। ऐसे महान् व्यक्तित्व निःसंदेह समाज के लिए गौरव होते हैं। आप सरलता एवं सादगी के धनी थे। कोटि-कोटि वंदन।

(पृष्ठ तीन का शेष)

बैनाथा... इसी दिन दक्षिण-पश्चिम जयपुर प्रांत में स्थित राजनौता गांव की लुणाजी की ढाणी में स्नेहमिलन संपन्न हुआ, जिसमें अनेकों व्यक्ति श्री क्षत्रिय युवक संघ की संस्कार प्रणाली को जानने एवं समझने के लिए एकत्रित हुए। कार्यक्रम के दौरान संघ के शिविर कार्यालय प्रभारी राजेन्द्र सिंह बोबासर ने समाज की वर्तमान स्थिति को रेखांकित करते हुए इस प्रकार के शिक्षण की हमारे सामाजिक एवं सांस्कृतिक अस्तित्व हेतु अनिवार्यता बताई। जयपुर संभाग प्रमुख विक्रमसिंह सिंघाणा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का विस्तृत परिचय दिया। रेंवतसिंह धीरा ने पूज्य तनसिंह जी का परिचय प्रस्तुत किया। प्रांत प्रमुख रामसिंह आकदड़ा भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। 10 सितम्बर को ही शेरगढ़ प्रांत के खिंयासरिया गांव में भी स्नेहमिलन संपन्न हुआ, जिसमें प्रांत के स्वयंसेवकों के साथ ही केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत भी अपने व्यस्त कार्यक्रम से समय निकालकर सम्मिलित हुए। मंत्री गजेन्द्र सिंह का स्वागत करने के उद्देश्य से स्वयंसेवकों द्वारा स्नेहमिलन रखा गया। स्वागत के पश्चात् संघ परिवार के इस होनहार सदस्य को इस उपलब्धि पर सभी स्वयंसेवकों ने बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इसी दिन गुड़ामालानी प्रांत में जेठमालसिंह की ढाणी, उण्डखा में भी स्नेहमिलन व स्नेहभोज का कार्यक्रम आयोजित हुआ। स्नेहमिलन के दौरान प्रांत प्रमुख गणपतसिंह बूठ ने आगामी महाबार शिविर हेतु विभिन्न स्वयंसेवकों को दायित्व सौंपे। उन्होंने स्वयंसेवकों से कहा कि माननीय संघ प्रमुख श्री द्वारा सौंपे गए कार्य को हमें पूर्ण निष्ठा से निभाना है, जिससे समाज में संस्कार निर्माण की व्यापक आवश्यकता को पूरा करने में हम सहयोगी बन सकें।

धर्मेन्द्र सिंह बने स्वतंत्र निदेशक

झुंझुनूं जिले के बड़ागांव के मूल निवासी एवं वर्तमान में जयपुर में निवासरत धर्मेन्द्रसिंह शेखावत को केन्द्र सरकार ने इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड के स्वतंत्र निदेशक मंडल में शामिल किया है। मात्र 45 वर्ष की उम्र में बनने वाले वे पहले स्वतंत्र निदेशक हैं। धर्मेन्द्रसिंह 2002 से चार्टेड अकाउंटेड का काम कर रहे हैं एवं भाजपा के सीए प्रकोष्ठ के जयपुर जिला संयोजक हैं। इनके पिता जसवंतसिंह प्रधानाचार्य के पद से सेवानिवृत हैं।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामानाएं

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक एवं जोधपुर सांसद

श्री गजेन्द्रसिंह शेखावत (महरोली)

के केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री बनने पर

हार्दिक बधाई एवं उत्तरोत्तर प्रगतिमान रहने की शुभकामनाएं

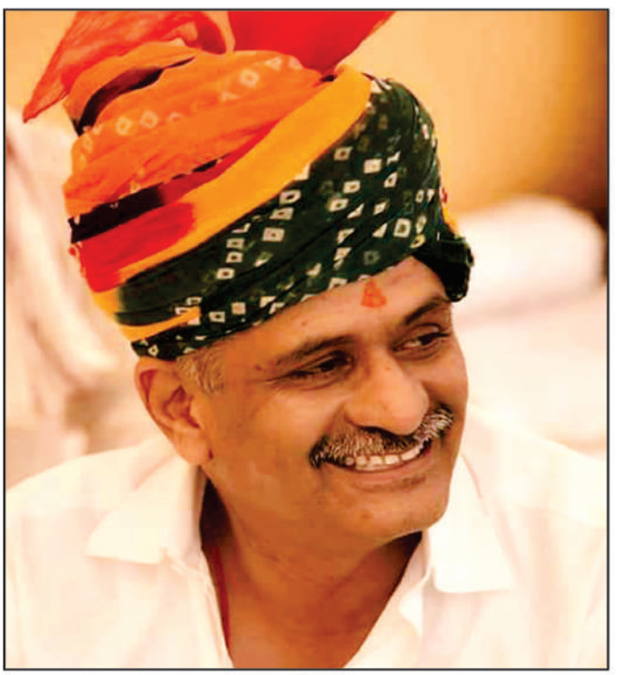

शुभेच्छु :

मोहनसिंह
रेवाड़ा हाल सूरत
9427136608

लेखराजसिंह
भाडली हाल सूरत
9724906997

दिलीपसिंह
गड़ा, शेरगढ़
हाल सूरत
9375852588

ईश्वरसिंह
नैनावा
हाल मुंबई

श्रीपालसिंह
सुरावा
हाल मुंबई

नाथूसिंह
काठाडी हाल मुंबई
9324291258

हुकमसिंह
पिपळून
हाल मुंबई

श्रवणसिंह
मवड़ी
हाल मुंबई

मोहनसिंह
मोडरड़ी
हाल मुंबई

रामसिंह
धीरा
हाल मुंबई

गणपतसिंह
फागोतरा
हाल मुंबई

गंगासिंह
काठाड़ी
हाल दिल्ली

प्रेमसिंह
रेवाडा जेतमाल,
पी.राठौड़
एण्ड कं. सूरत

मोहकमसिंह
फुलिया (जैसलमेर)
हाल सूरत
9317512635

भोजराजसिंह
रतन महाराज
का तला
हाल सूरत
9328032014

अजीतसिंह
कुकणवाली, नागौर
हाल सूरत
7383817100

खुमानसिंह
मिठाड़ा
बाड़मेर
हाल सूरत
9726566862

विक्रमसिंह
आकोली
जालोर
हाल सूरत

बुधसिंह
केतु कला
जोधपुर
हाल सूरत

विक्रमसिंह
देणोक
जोधपुर
9925710297

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org